अगस्त: 2023

वर्ष : 6 अंक : 11

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

यदि मनुष्य सीखना चाहे, तो उसकी हर भूल उसे कुछ शिक्षा दे सकती है।" महात्मा गाँधी

सर्वप्रथम आप सभी को 77वें स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ...

संस्थान का मासिक समाचार अगस्त 2023 आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस अंक में संस्थान की जुलाई, 2023 में सम्पन्न गतिविधियों को दिखाया गया है।

अगस्त का महीना हम सभी भारतवासियों के लिए एक विशेष महत्व रखता है। यह विशेष माह हमें स्वाधीनता दिवस की याद दिलाता है और एक विशेष अनुभूति से भर देता है जिसमे जोश, राष्ट्रीय भावना, देश के प्रति एक संकल्प, आपसी भाईचारा और सौहार्द आदि शामिल हैं।

संस्थान में 10 जुलाई, 2023 को 'राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस' मनाया गया। इस अवसर पर कई प्रकार के कार्यक्रम जैसे संगोष्ठी, किसानों के साथ पारस्परिक संवाद आयोजन किया गया। साथ ही, देश के विभिन्न राज्यों के 9 प्रगतिशील किसानों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया। "मिशन 3000", जिसका लक्ष्य देश भर में 3000 महिलाओं को उनके आर्थिक सशक्तिकरण के लिए सक्रिय समर्थन प्रदान करना है, के तहत सिफ़री ने 4 जुलाई 2023 को रथींद्र केवीके, श्रीनिकेतन, बीरभूम के परिसर में अनुसूचित जनजाति घटक (एसटीसी) के तहत सजावटी मछली पालन पर एक "वितरण और प्रदर्शन कार्यक्रम' का आयोजन किया।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

मणिपुर के खौपम जलाशय में पेन पालन तकनीक द्वारा बाड़े में मछली पालन : एक सफलता की गाथा

उत्तर-पूर्वी राज्य मणिपुर के नोनी जिले में पश्चिमी पहाड़ी में मानचेन दीव नदी पर स्थित खौपम जलाशय 58 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला एक छोटा जलाशय है। यह जलाशय खोपम बांध पर स्थित है जिसे वर्ष 1983 में नोनी और तामेंगलोंग जिले के सिंचाई और पानी

की आपूर्ति के लिए चालू किया गया था। हालांकि, तकनीकी विफलताओं के कारण खोपम बांध दशकों से बेकार पड़ा हुआ है, और अब इसका उपयोग केवल जल भंडारण के लिए होता है। नोनी जिले में खौपम घाटी के निवासी काबुई/रोंगमेई जनजाति के हैं, जो मणिपुर की दूसरी प्रमुख जनजाति है। मई 2022 में भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक टीम ने इस जलाशय का सर्वेक्षण किया। इसके बाद संस्थान ने इस क्षेत्र की आदिवासी मछुआरों के आजीविका उन्नयन, आय वृद्धि और

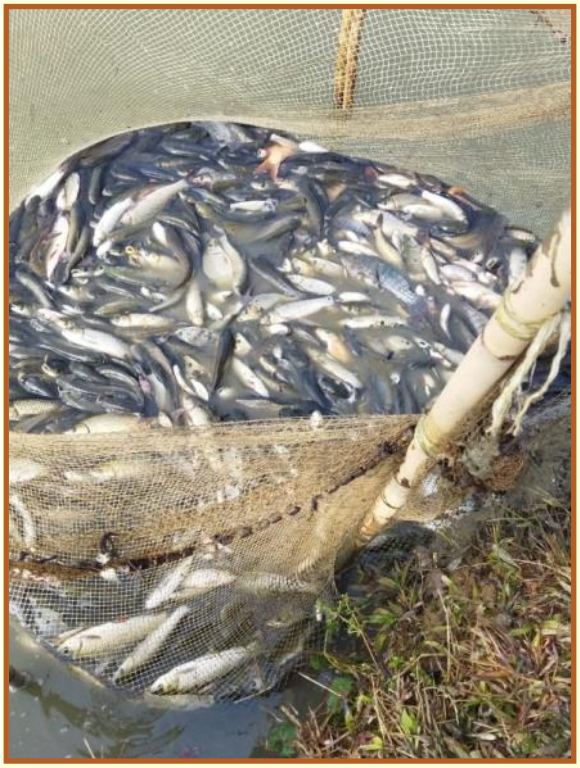

पोषण सुरक्षा को ध्यान में रखकर पेन पालन के प्रदर्शन के लिए इस जलाशय का चयन किया। इसका प्रदर्शन का उद्देश्य इस जलाशय में बड़ी मछलियों का उत्पादन करना था। इससे पहले दिसंबर 2017 में एक सहकारी समिति, " Chwncham Multipurpose Integrated Co-operative Society" पंजीकृत की गई थी जिसमें 73 सदस्य थे। पर वर्तमान सोसायटी या किसी अन्य सरकारी संगठन द्वारा आज तक जलाशय में मछली संचयन की कोई रिपोर्ट नहीं हुई थी। जलाशय में मत्स्य पालन पूरी तरह से प्राकृतिक मछली स्टॉक और पास के जलीय कृषि फार्मों से कॉमन कार्प, सिल्वर कार्प और ग्रास कार्प जैसे विदेशी कार्प प्रजातियों के आकस्मिक प्रवेश पर निर्भर करता है। जलाशय खुपुम घाटी में स्थित है और यह एक बहुत ही सुंदर और कम ढलान वाली घाटी है। मछली पालन के लिए जलाशय के निचले भाग में एक उपयुक्त स्थान बनाया गया है।

इस जलाशय में बड़ी मछली उत्पादन और उसके आसपास संचालित सहकारी समिति की आदिवासी मछुआरों की आजीविका वृद्धि के लिए सिफ़री ने बड़ी मछली के उत्पादन के लिए मछली बीज, 2 टन पेलेटेड फ़ीड (CIFRI

CAGEGROW) और दो पेन (0.1 हेक्टेयर) वितरित किया। इसके अतिरिक्त, सिफरी द्वारा सहकारी समिति को 10 मीटर लंबी एक मोटर चालित एफआरपी नाव भी दी गई। जलाशय के मध्य क्षेत्र में लगभग 2.5 मीटर औसत गहरे पानी में एक साथ दो पेन (0.1 हेक्टेयर) स्थापित किए गये। स्थापित पेन में 2:2:1 के अनुपात में 8.9 ± 0.22 सेमी, 11.2 ± 0.30 सेमी और 8.5 ± 0.03 सेमी आकार के क्रमशः कॉमन कार्प (साइप्रिनस कार्पियो), ग्रास कार्प (टेनोफैरिंगोडोन आइडेला) और रोहू (लेबियो रोहिता) के अंगुलिकाओं का (38 अंगुलिकाएँ प्रति वर्ग मीटर की दर से) संचयन किया गया।

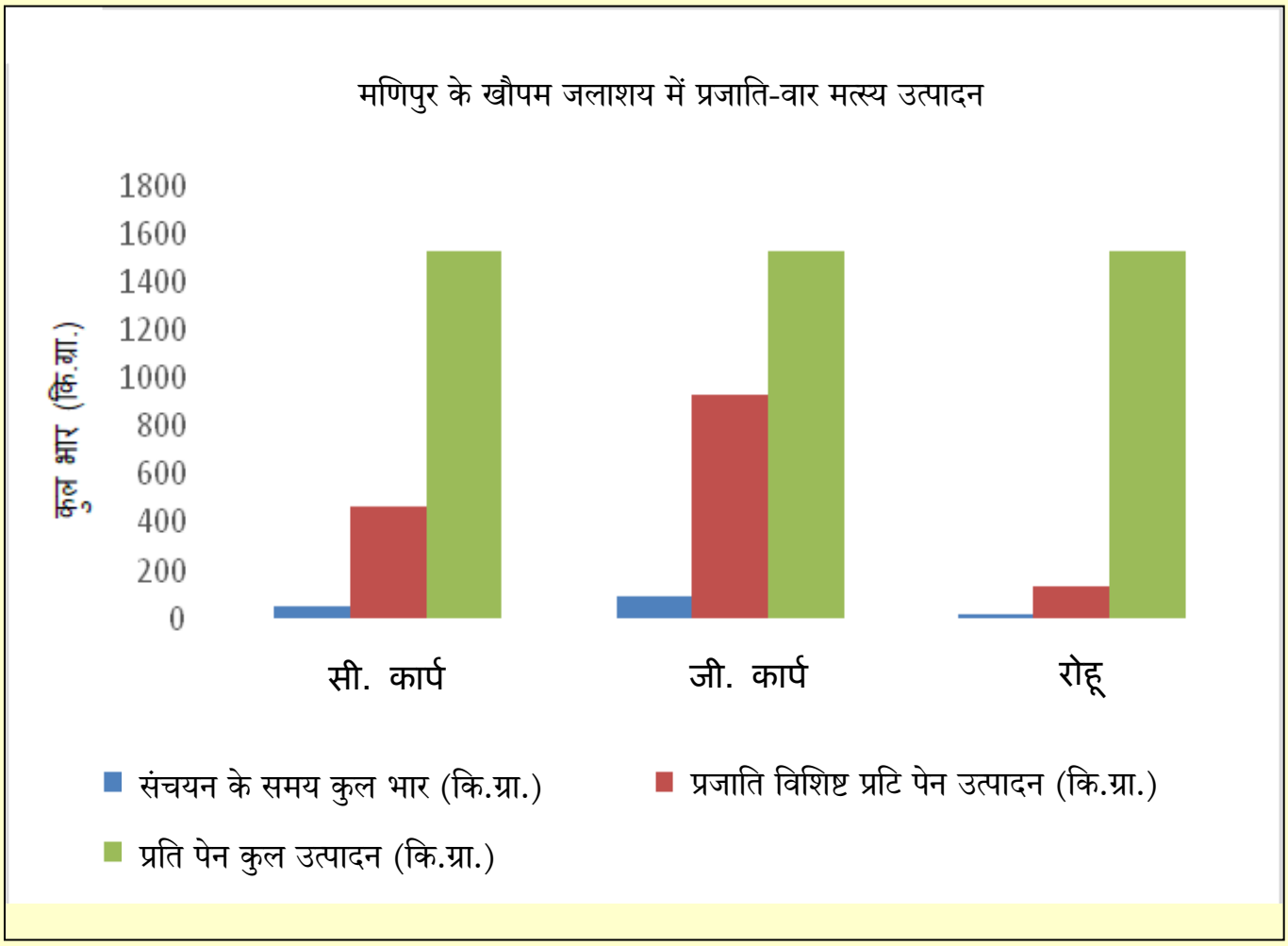

संचयित मछलियों को दिन में दो बार (सुबह 09.00 बजे ; दोपहर 2:30 बजे) फ्लोटिंग पेलेटेड फ़ीड (CIFRI CAGEGROW®) खिलाया गया। इसमें 28% कच्चे प्रोटीन और 5% वसा मिश्रित किया गया था। प्रारंभ में, मछलियों को शरीर के वजन के 5% की दर से भोजन दिया गया और फिर भोजन दर को 4% और 3% पर समायोजित किया गया। सितंबर से दिसंबर 2022 के बीच 120 दिनों तक पेन में मछलियों का पालन किया गया और सहकारी समिति के सदस्यों ने भोजन और पेन का रखरखाव किया। सामान्य कार्प, ग्रास कार्प और रोहू में संवर्धन अवधि के अंत में औसत वजन क्रमशः 372.94±1.70 ग्राम, 725±17.02 ग्राम, 210.00±0.87 ग्राम दर्ज किया गया। मछलियों की अतिजीविता दर 82 से 86% तक थी। कॉमन कार्प, ग्रास कार्प और रोहू की विशिष्ट वृद्धि दर क्रमशः 1.5, 2.11 और 2.7 दर्ज की गई। प्रति पेन कुल मछली उत्पादन 1535 किलोग्राम और प्रजाति-विशिष्ट अर्थात कॉमन कार्प, ग्रास कार्प और रोहू का उत्पादन क्रमशः 466 किलोग्राम, 935 किलोग्राम और 134 किलोग्राम दर्ज किया गया। भंडारित मछलियों के पेन पालन का लागत लाभ-अनुपात 1.50 था जो इसकी लाभप्रदता को दर्शाता है। फ़ीड और बीज का व्यय कुल लागत का 60% था, इसलिए, यदि फ़ीड और बीज की लागत को कम किया जा सके तो यह पालन पद्धति अधिक लाभदायक होगा और ग्रास कार्प के लिए सभी पेन का उपयोग करने से अधिक लाभ-लागत अनुपात मिलेगा। यह तकनीक समाज के मछुआरों के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य पाई गई है, जो उन्हें जलाशय से मछली पकड़ने के अलावा आने वाले वर्षों में अपनी आय के प्रमुख स्रोत के रूप में इसे लागू करने/अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

विलुप्त हो रहे मछलियों के दो लाख बीज को सिफरी द्वारा बलिया के गंगा नदी में छोड़ा गया

गंगा नदी में विलुप्त हो रहे मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण एवम् संवर्धन को ध्यान में रखते हुए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) के द्वारा आज दिनांक 1 जुलाई 2023 को, बलिया के कोटवा-

नारायणपुर घाट पर गंगा नदी में 200000 (दो लाख) भारतीय प्रमुख कार्प के बीज को छोड़ा गया। राष्ट्रीय नदी रैंचिंग कार्यक्रम 2023 के अवसर पर बलिया के माननीय सांसद श्री वीरेन्द्र सिंह मस्त की उपस्थिति में -कतला, रोहू तथा मृगल मछलियों के बीज को रैंचिंग सह जन जागरूकता कार्यक्रम के तहत संचय किया गया। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) के अन्तर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक डॉ बि॰ के॰ दास ने उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए गंगा नदी में मछली और रैंचिंग के महत्व को बताया। उन्होने कहा कि इस वर्ष गंगा नदी में कम हो रहे महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियों के 25 लाख से ज्यादा बीज का रैंचिंग किया गया है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बलिया के माननीय सांसद श्री वीरेन्द्र सिंह मस्त ने इस अवसर पर गंगा के महत्व को बताया साथ ही इसको स्वच्छ रखने एवं जैव विविधता को बचाने के लिए लोगों से आह्वान किया। उन्होंने बलिया जनपद के जलभराव वाले जल क्षेत्र जैसे सुरहताल, भागर नाला, मगही नदी, कोरहरा नाला आदि में मत्स्य उत्पादन के लिए प्रेरित किया जिससे रोजगार अवसर के साथ- साथ जल क्षेत्रों के प्रदूषण को कम करने में सहायता मिलेगी। सांसद जी ने मत्स्य पालन के साथ मिश्रित कृषि और

मोटे अनाज की खेती को अपनाने के लिए अनुरोध किया। इस अवसर पर माननीय सांसद जी ने सक्रिय एवं जरूरतमंद मछुआरों को जाल का भी वितरण किया। अन्य अतिथिगण श्री शिवांकित वर्मा, खण्ड विकास अधिकारी,श्री संजय कुमार सहायक मत्स्य निदेशक, उ प्र, श्री डी के सिंह, जिला कृषि अधिकारी आदि ने जैव विविधता और मछलियों के बारे में जागरूक किया तथा गंगा को साफ रखने के लिए कहा।

कार्यक्रम के प्रारंभ में केंद्र प्रभारी डॉ. धर्म नाथ झा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में आस-पास गाव के मत्स्य पालक, मत्स्य व्यवसायी तथा गंगा तट पर रहने वाले स्थानीय लागों ने भाग लिया। अन्त में संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. राजू बैठा ने औपचारिक धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में प्रयुक्त मत्स्य बीज का रख रखाव एवं व्यवस्था संस्थान के वैज्ञानिक डॉ मितेश रामटेक, डॉ विकास कुमार, एवं अन्य अधिकारियों और शोधार्थीयों ने किया।

पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले की आदिवासी महिलाओं के लिए आजीविका विकल्प तैयार करना: आईसीएआर-सिफ़री की एक पहल

बीरभूम जिला पश्चिम बंगाल के वंचित जिलों में से एक है, जहां अत्यधिक गर्मी के कारण साल में अधिकांश समय अधिकतम कृषि भूमि सूखी रहती है। जिले की कुल आबादी का लगभग 7% अनुसूचित जन जाति से है। इसे ध्यान में रखते हुए, आईसीएआर-सिफ़री ने आजीविका के विकल्प उपाय उत्पन्न करने के लिए मत्स्य पालन इनपुट के साथ-साथ तकनीकी जानकारी देकर उन अनुसूचित जन जाति समुदाय से संबंधित ग्रामीण आबादी की सहायता करने की पहल की हैं।

कोविड-19 महामारी की पहली लहर के बाद, सिफ़री ने रथींद्र केवीके के सहयोग से, श्रीनिकेतन के 16 अलग-अलग स्वंय सहायता समूह से कुल 152 लाभार्थियों का चयन किया और मछली के बीज, मछली का चारा और चूना प्रदान करके उनको सहायता प्रदान की। 2021 से

अनुसूचित जन जाति घटक (एसटीसी) और अनुसूचित जाति उपयोजना (एससीएसपी) घटक के माध्यम से सिफ़री ने वैकल्पिक आजीविका के उपाय उत्पन्न करने के लिए सजावटी मछली पालन प्रथाओं का ज्ञान और कौशल को विकसित करने में ग्रामीण महिलाओं का समर्थन करने के लिए एक नई पहल की है। यह पहल सिफ़री के 'मिशन 3000' का एक हिस्सा है, जिसका लक्ष्य देश भर में 3000 महिलाओं को उनके आर्थिक सशक्तिकरण के लिए सक्रिय समर्थन प्रदान करना है। इस उद्देश्य को सफल बनाने के लिए, सिफ़री ने 4 जुलाई 2023 को रथींद्र केवीके, श्रीनिकेतन, बीरभूम

के परिसर में अनुसूचित जन जाति घटक (एसटीसी) के तहत सजावटी मछली पालन पर एक 'इनपुट वितरण और प्रदर्शन कार्यक्रम' का आयोजन किया।

सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मचारियों और शोधार्थीयों सहित अपनी 'टीम' के साथ इनपुट वितरित किए, महिलाओं को जागरूक किया और टैंकों में सजावटी मछली पालन की तकनीकों का प्रदर्शन किया। इसके अलावा, प्रोफेसर अरुण बारिक, प्रिंसिपल, पीएसबी, विश्व भारती, डॉ. गुनिन चट्टोपाध्याय, पूर्व प्रोफेसर, विश्व भारती, डॉ. सुब्रतो मंडल, कार्यक्रम समन्वयक, रथींद्र केवीके और श्री के. मुखर्जी, राज्य मत्स्य पालन विभाग से जिला मत्स्य अधिकारी भी कार्यक्रम में मौजूद थे।

इस अवसर पर, जिले के विभिन्न गांवों की 30 आदिवासी महिलायों को सजावटी मछली के साथ-साथ सजावटी मछली टैंक और सजावटी मछली किट वितरित किए गए। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य इस जिले की आदिवासी महिलाओं का समर्थन करना और उनकी आय के स्तर के साथ-साथ आजीविका को सुधारना था। कुल मिलाकर आईसीएआर-सिफ़री के निदेशक के नेतृत्व में आदिवासी महिला प्रतिभागियों के चेहरे पर संतोषजनक मुस्कान इस कार्यक्रम की सफलता को दर्शाता हैं।

भाकृअनुप-सिफरी ने राष्ट्रीय मछली किसान दिवस, 2023 पर प्रगतिशील मछली किसानों को सम्मानित किया।

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) में आजादी के अमृत महोत्सव काल में संस्थान मुख्यालय में "राष्ट्रीय मछली किसान दिवस" का आयोजन किया। राष्ट्रीय मछली किसान दिवस 10 जुलाई 2023 को प्रेरित प्रजनन तकनीक की सफलता के

उपलक्ष्य में मनाया जाता है। प्रो. हीरालाल चौधरी और डॉ. के.एच. अलीकुन्ही ने सर्वप्रथम 'प्रेरित प्रजनन तकनीक' का सफल प्रयोग किया था। इस तकनीक को 10 जुलाई 1957 को तत्कालीन केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान स्टेशन, जिसे वर्तमान में भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), बैरकपुर के नाम से जाना जाता है, के तत्वाधान में ओडिशा के अंगुल मछली फार्म में सफलतापूर्वक विकसित किया गया था।

कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. हीरालाल चौधरी और डॉ. के.एच. अलीकुन्ही को श्रद्धांजलि दी गई। सर्वप्रथम संस्थान के निदेशक,डॉ. बि.के. दास ने उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों, किसानों और सभी का स्वागत किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सरकार ने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत मत्स्य पालन विकास के लिए 20,000 करोड़ रुपये की सहायता राशि प्रदान की है। इसके अलावा, सिफरी ने एससीएसपी कार्यक्रम के तहत सजावटी मछली पालन इकाई विकसित करने के लिए 3000 महिलाओं को सहायता प्रदान करने तथा उनके आर्थिक सशक्तिकरण के लिए एक कार्यक्रम शुरू किया है। सम्मानित अतिथि,डॉ. बी.बी. जाना, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, कल्याणी विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल, फेलो, राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली और सचिव,कल्याणी शाइन इंडिया ने किसानों की आजीविका उत्थान के लिए सिफरी के पहल की सराहना की। उन्होंने नदी प्रदूषण और पर्यावरण

की बिगड़ती स्थिति पर चिंता व्यक्त की क्योंकि इससे मत्स्य पालन, इसके उत्पादन और संरक्षण पर हानिकारक प्रभाव पड़ रहा है। श्री लोकमान मोल्ला, सचिव, कुलटोली मिलनतीर्थ सोसाइटी, सुंदरबन ने सुंदरबन में सिफरी की पहल की सराहना की। प्रोफेसर कुलदीप कृष्ण शर्मा, मुख्य अतिथि और कुलपति, हिमालयी विश्वविद्यालय, ईटानगर ने इस बात पर प्रकाश डाला कि अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन क्षेत्र में, सिफरी एक अग्रणी संस्थान है और इसने महिला सशक्तिकरण में बहुत योगदान दिया है। अनुसंधान और शैक्षणिक सहयोग के लिए सिफरी और हिमालयी विश्वविद्यालय, ईटानगर के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ। प्रोफेसर कुलदीप कृष्ण शर्मा ने बताया कि सिफरी में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले किसान अपने ज्ञान और संस्थान प्रौद्योगिकी को अन्य स्थानों पर विस्तार करने की दिशा में एक माध्यम की भूमिका निभा सकते हैं, जिससे खाद्य सुरक्षा समस्या से निपटने में भी सहायता मिल सकेगी। इस अवसर पर सापौल (बिहार), पश्चिमी चंपारण (झारखंड), एलुरु (आंध्र प्रदेश), नलबाड़ी (असम), गंगटोक (सिक्किम, बालासोर (ओडिशा) और दक्षिण 24 परगना (पश्चिम बंगाल) राज्यों के 9 प्रगतिशील मछली किसानों को सम्मानित किया गया। किसानों को सम्मानित करने का उद्देश्य उनके कार्यों और प्रयासों को जनमानस में प्रचार करने और लोकप्रिय बनाने के साथ अन्य किसानों को मात्स्यिकी क्षेत्र के प्रति प्रोत्साहित करना है। इस कार्यक्रम में देश के 8 आर्द्रक्षेत्रों (पश्चिम बंगाल, बिहार, मणिपुर और असम) की सफलता गाथा पर एक पुस्तक (सक्सेस स्टोरीज़ फ्रॉम वेटलैंड्स) का विमोचन किया गया संस्थान के क्षेत्रीय केंद्रों, बैंगलोर, वडोदरा और प्रयागराज ने भी राष्ट्रीय मछली किसान दिवस मनाया, जिसमें 155 किसान और 20 छात्र शामिल हुए।

भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने हिमालयन यूनिवर्सिटी, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर (सिफ़री) ने 10 जुलाई, 2023 को हिमालयन विश्वविद्यालय, जोलोंग, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

डॉ. कुलदीप कृष्ण शर्मा, कुलपति, हिमालयन विश्वविद्यालय, ईटानगर (अरुणाचल प्रदेश का निजी राज्य विश्वविद्यालय) और सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के. दास, ने अपने-अपने संस्थानों की ओर से समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य खुले जल मत्स्य पालन अनुसंधान, शैक्षणिक और क्षमता निर्माण के क्षेत्र में दोनों संस्थानों के बीच तकनीकी सहयोग की दिशा में सार्वजनिक निजी भागीदारी को मजबूत करना था।

डॉ. कुलदीप कृष्ण शर्मा, कुलपति, हिमालयन विश्वविद्यालय, ईटानगर ने युगांतरकारी प्रौद्योगिकियों के माध्यम से पिछले कई दशकों से भारत में अन्तर्स्थलीय मछली उत्पादन की वृद्धि में सिफ़री की भूमिका की सराहना की। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस समझौता ज्ञापन से विश्वविद्यालय और आईसीएआर-सिफ़री को अनुसंधान, तकनीकी और शैक्षणिक सहयोग करने में सक्षम करेगा जिससे अंततः अरुणाचल प्रदेश राज्य को मदद मिलेगी।

सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने इस बात पर जोर दिया कि दोनों संस्थानों के बीच दीर्घकालिक सहयोग से अनुसंधान और प्रशिक्षण दोनों पहलुओं से छात्रों को मदद मिलेगी।

आईसीएआर-सिफ़री द्वारा "अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन" पर प्रशिक्षण सह क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने बिहार के रोहतास जिले के मछली किसानों के लिए 4-10 जुलाई 2023 के दौरान 'अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन' पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण-सह-क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में एक मत्स्य विकास अधिकारी सहित 21 महिला मत्स्य कृषकों सहित 30 मत्स्य कृषकों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम मत्स्य निदेशालय, बिहार द्वारा प्रायोजित किया गया था।

अपने उद्घाटन भाषण में संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास, ने मछुआरों को स्थायी आजीविका सुरक्षित करने के लिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के बारे में सीखने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने मछुआरों से उत्पादन और उत्पादकता को अधिकतम करने के लिए अपने उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने का आग्रह किया। सप्ताह भर चलने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम में अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन, तालाब प्रबंधन सहित मछली पालन, प्रेरित प्रजनन, मिश्रित मछली पालन, सजावटी मत्स्य पालन, घेरे में मछली पालन, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन, और प्रधान मंत्री मत्स्य सम्पदा योजना का सामान्य अवलोकन शामिल था। प्रतिभागियों को संस्थान के रीसर्क्युलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम (आरएएस), सजावटी हैचरी इकाइयों और मछली फ़ीड मिल से भी परिचित कराया गया।

क्षेत्र दौरे के हिस्से के रूप में, आईसीएआर-सीफा, रहारा मछली फार्म, पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि, (ईकेडब्ल्यू), सजावटी मछली बाजार और अन्य स्थानों का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों को 10 जुलाई 2023 को प्रशिक्षण पूरा होने के बाद डॉ. कुलदीप कृष्ण शर्मा, कुलपति, हिमालयन विश्वविद्यालय, ईटानगर और डॉ. बी.बी. जाना, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, कल्याणी विश्वविद्यालय द्वारा अपना प्रशिक्षण प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ। डॉ. शर्मा ने सभी प्रतिभागियों को बधाई दी और कहा मैं पहली बार सत्तर प्रतिशत महिला मछली पालकों को प्रशिक्षु के रूप में देख रहा हूं।

आईसीएआर-सिफ़री ने पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना और नादिया जिले के बाढ़ग्रस्त आर्द्रभूमि में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए कदम उठाया

आईसीएआर-सिफ़री ने 3 बाढ़ग्रस्त आर्द्रभूमियों (नादिया जिले के कुमली और खालसी आर्द्रभूमि और पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना से चोमोरदाहा आर्द्रभूमि) में इन-सीटू मछली बीज उगाने और कल्चर आधारित मत्स्य पालन (सीबीएफ) के माध्यम से आजीविका बनाए रखने के

लिए अनुसूचित जाति के मत्स्य पलकों की मदद किया। 13 और 14 जुलाई, 2023 को, आईसीएआर-सिफ़री ने मछली बीज उगाने की गतिविधियों में सहायता के लिए तीन आर्द्रभूमियों को 1 टन मछली चारा प्रदान किया। इससे पहले, आईसीएआर-सिफ़री ने आर्द्रभूमि में कल्चर -आधारित मत्स्य पालन के लिए पेन कल्चर के माध्यम से इन-सीटू मछली बीज को प्रदर्शित करने के लिए एचडीपीई पेन, मछली पकड़ने की नावें, कोरेकल, मछली का चारा, मछली के बीज, मछली पकड़ने के जाल और अन्य मत्स्य पालन उपकरण प्रदान किए थे। इस वर्ष पीपीपी मोड शुरू किया गया, जहां लाभार्थी बाड़े में मछली के बीज का पालन करेंगे ,जिससे आर्द्रभूमि से मछली उत्पादन बढ़ाया जा सके।

मछली चारा का वितरण संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के.दास द्वारा किया गया। मछली चारा वितरण कार्यक्रम का समन्वय आईसीएआर-सिफ़री के निदेशक के मार्गदर्शन में सुश्री संगीता चक्रवर्ती (टी-3) और श्री कौशिक मंडल (टी-3) की सहायता से वैज्ञानिक डॉ. लियानथुआमलुया द्वारा किया गया था। इस कार्यक्रम से लगभग 550 लाभार्थियों को लाभ होने की उम्मीद है।

बिहार के नवादा जिले के मछली किसानों का क्षमता निर्माण

नवादा जिला बिहार के दक्षिण में स्थित प्राचीन मगध का एक हिस्सा है और जिले की जलवायु उष्णकटिबंधीय से आर्द्र है। गर्मी के मौसम के दौरान जिले को पानी की कमी की समस्या का भी सामना करना पड़ता है। इस जिले के मछुआरों की आय को दोगुना करने के उद्देश्य से कौशल विकास और क्षमता निर्माण कार्यक्रम के एक हिस्से के रूप में 13 जुलाई से 19 जुलाई 2023 के दौरान आईसीएआर- सिफ़री, बैरकपुर में "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 30 प्रशिक्षुओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने मछुआरों की स्थायी आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर कौशल विकास पर जोर दिया। उन्होंने मछुआरों से उत्पादन और उत्पादकता को अधिकतम करने के लिए उनके पास उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने का आग्रह किया । प्रशिक्षण के दौरान, किसानों को तालाब निर्माण और प्रबंधन, मिट्टी और पानी की गुणवत्ता प्रबंधन, चारा और भोजन प्रोटोकॉल, सजावटी मछली सहित अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं के बारे में सिखाया गया और फील्ड दौरे के साथ-साथ घरेलू और व्यावहारिक ज्ञान दोनों से उन्हें अवगत कराया गया। मछलियों के प्रजनन पहलू, पोषण संबंधी आवश्यकताएं, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन, बाड़ेमें पालन, विभिन्न मछली पालन गतिविधियों के आर्थिक पहलू, मछली विपणन, सरकारी नियम, मत्स्य पालन पर जलवायु का प्रभाव आदि विषयों से भी उन्हें परिचित कराया गया। इसके अलावा, प्रशिक्षुओं को आईसीएआर-सीफा कल्याणी केंद्र, बालागढ़, पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि (ईकेडब्ल्यू) के साथ-साथ गालिब स्ट्रीट (कोलकाता) के सजावटी मछली बाजार के प्रदर्शन दौरे पर ले जाया गया।

प्रशिक्षुओं ने संस्थान की फ़ीड मिल में बायो-फ्लॉक सिस्टम, रीसर्क्युलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम (आरएएस), सजावटी मछली पालन अभ्यास और मछली फ़ीड तैयार करने की प्रक्रिया का भी दौरा किया और प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त की। प्रशिक्षुओं को बुनियादी जल गुणवत्ता मापदंडों, स्थानीय रूप से उपलब्ध फ़ीड सामग्री का उपयोग करके मछली फ़ीड तैयार करने आदि जैसे विभिन्न आवश्यकता-आधारित पहलुओं पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान की गई। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास, एफआरएआई विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एस. सामंता और आरडब्ल्यूएफ विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आर. के मन्ना के साथ बातचीत सत्र के बाद प्रशिक्षुओं को उनके प्रमाण पत्र भी दिए गए। फीडबैक सत्र में प्रशिक्षुओं ने अपनी संतुष्टि व्यक्त की और साथ ही यहाँ से प्राप्त ज्ञान को उनके संबंधित जल संसाधनों में लागू करने की भी बात कही।

छत्तीसगढ़ के मत्स्य पालन विभाग के युवा अधिकारियों को आईसीएआर-सिफ़री में प्रशिक्षित किया गया

सिफ़री , मुख्यालय (बैरकपुर) में 24-28 जुलाई, 2023 के दौरान छत्तीसगढ़ के अधिकारियों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर एक क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम में दस महिला अधिकारियों सहित इक्कीस युवा अधिकारियों ने भाग लिया।

छत्तीसगढ़ प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है। छोटे और मध्यम जलाशय इस राज्य के प्रमुख जल संसाधन हैं। सबसे पहले प्रशिक्षुओं की प्रशिक्षण आवश्यकता का आकलन किया गया और उनकी आवश्यकताओं के आधार पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम विकसित किया गया। अधिकांश अधिकारी कम उम्र के थे और नई तकनीकों और प्रोटोकॉल को सीखने के लिए बहुत उत्साहित थे। प्रशिक्षण के दौरान अधिकारियों को बाहर के दौरे के साथ-साथ व्यावहारिक और सैद्धांतिक ज्ञान से भी अवगत कराया गया। विभिन्न विषयों को कवर किया गया जैसे जल गुणवत्ता विश्लेषण, नदी मत्स्य प्रबंधन, जलाशय मत्स्य प्रबंधन, संवर्धित-आधारित मत्स्य पालन, मछली चारा और भोजन प्रोटोकॉल, रोग प्रबंधन, पेन कल्चर, केज कल्चर, जीआईएस, कैच अनुमान, सरकारी नियम, पीआरए के माध्यम से समस्या की पहचान आदि। इसके अलावा प्रशिक्षुओं को पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि और सीआईएफई, कोलकाता केंद्र के फील्ड एक्सपोजर दौरे पर ले जाया गया।

संस्थान के निदेशक डॉ. बि .के. दास ने "लघु पैमाने पर अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर एक कक्षा भी ली। प्रशिक्षुओं ने उनके साथ बातचीत की और अन्तर्स्थलीय खुले जल मत्स्य पालन के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। डॉ. दास ने अधिकारियों को इस क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित किया। डॉ. श्रीकांत सामंत, एचओडी, एफआरएआई डिवीजन, डॉ. आर.के. मन्ना, एचओडी, आरडब्ल्यूएफ डिवीजन ने कक्षाएं लीं और अधिकारियों के साथ बातचीत की। प्रशिक्षु अधिकारियों को एक प्रशिक्षण मैनुअल भी दिया गया। प्रशिक्षण का फीडबैक सत्र भी एक संरचना में आयोजित किया गया।

समापन सत्र में प्रशिक्षुओं ने प्रशिक्षण के बारे में अपने अनुभव सांझा किये। लगभग 97% प्रशिक्षुओं ने कहा कि वे प्रशिक्षण कार्यक्रम से अत्यधिक संतुष्ट हैं। उनमें से अधिकांश ने बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम उनके लिए बहुत उपयोगी रहा क्योंकि इससे उनके ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण में सुधार हुआ है। अधिकारियों ने यह भी बताया कि सिफ़री में प्रशिक्षण की स्थिति भी काफी अनुकूल थी। प्रशिक्षण का समन्वयन डॉ. ए.के. दास, डॉ. अपर्णा रॉय, सुश्री अंजना एक्का और श्री सतीश कौशलेश द्वारा किया गया और तकनीकी सहायता श्री सुजीत चौधरी, डॉ. अविषेक साहा, श्री मनबेंद्र रॉय और श्री कौशिक मंडल द्वारा प्रदान की गई।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- छत्तीसगढ़ के पांच छोटे जलाशयों (परालकोट, सुतियापाट, बहेराखार, राबो और घुनघुट्टा) के सर्वेक्षण से पता चला कि जलाशय 29-41 प्रजातियों की मछली विविधता देखी गई हैं । सीपीयूई (CPUE) 3.5-12.2 किलोग्राम / मछुआरे / दिन के बीच पाया गया है।
- गंगा नदी के ऊपरी और मध्य हिस्सों के सर्वेक्षण में 68 जेनेरा, 30 फैमिली और 13 ऑर्डर से संबंधित कुल 99 मछली प्रजातियां दर्ज की गईं।
- जून 2023 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से मछली लैंडिंग दर 14.41 टन थी, जो जून 2022 की तुलना में कुल मछली लैंडिंग में 69% की वृद्धि दर्शाती है।
- अरुणाचल प्रदेश के बिचोम जलाशय और बिचोम नदी (बिचोम बांध के अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम) में आठ स्टेशनों पर प्रायोगिक मछली पकड़ द्वारा कुल 15 मछली प्रजातियां दर्ज की गईं।
- मछुआरों की अनुकूली क्षमता बढ़ाने के लिए पश्चिम बंगाल के सिंद्रानी और चामता नामक दो बाढ़कृत मैदानी आर्द्रभूमि में स्थापित पेन में जलवायु लचीली छोटी स्वदेशी मछली, सिस्टोमस सराना का प्रदर्शन किया गया।
- एक अध्ययन में ताप्ती नदी में एक उच्च मूल्य वाली छोटी स्वदेशी मछली, एंब्लीफेरिंगोडोन मोला के कुछ नमूनों के रीढ़ की हड्डी में विकृति देखी गई। ऐसे संकेत बताते हैं कि इस नदी में मछली के स्वास्थ्य की निगरानी और कारण की पहचान करना आवश्यक है।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 10-11 जुलाई 2023 के दौरान प्रथम मछली किसान विज्ञान कांग्रेस (FFSC) और 23वें राष्ट्रीय मछली किसान दिवस में भाग लिया, जो मात्स्यिकी महाविद्यालय, केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल, राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) और पूर्वोत्तर मत्स्य पालन सोसायटी द्वारा संयुक्त रूप से मात्स्यिकी कॉलेज, लेमबुचेरा, त्रिपुरा में आयोजित किया गया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 13 जुलाई 2023 को पश्चिम बंगाल के जलाशयों में पिंजरे में मछली पालन पर सचिव, मत्स्य पालन विभाग, सरकार के साथ एक बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 16-18 जुलाई 2023 के दौरान नई दिल्ली में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 95वें स्थापना दिवस-सह-प्रौद्योगिकी दिवस में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 19-21 जुलाई, 2023 तक मात्स्यिकी महाविद्यालय, किशनगंज, बिहार में "स्थायी मत्स्य पालन से ग्रामीण निर्धनता को समृद्धि में बदलना (Transforming Rural Poverty to Prosperity through Sustainable Fisheries)" विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन और मत्स्य मेले में भाग लिया। निदेशक महोदय ने दिनांक 20 जुलाई, 2023 को " मछली स्वास्थ्य प्रबंधन में एक स्वास्थ्य दृष्टिकोण" पर वक्तव्य दिया।" ।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 19 जुलाई 2023 को बिहार कृषि प्रबंधन एवं विस्तार प्रशिक्षण संस्थान (BAMETI), पटना में मत्स्य पालन विभाग, बिहार सरकार द्वारा आयोजित "बिहार में आर्द्रभूमि मत्स्य पालन विकास" पर एक दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।

विविध

- संस्थान ने मत्स्य पालन विभाग, झारखंड सरकार के अधिकारियों सहित हितधारकों और मछुआरों के साथ दिनांक 6-7 जुलाई, 2023 को बैठक आयोजित किया। इस बैठक का उद्देश्य कम उपयोग वाले जलाशयों में स्कैंपी मत्स्य पालन संवर्धन करना है। इस बैठक में 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- संस्थान ने दिनांक 04-10 जुलाई, 2023 के दौरान रोहतास, बिहार के किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें रोहतास जिले के 30 किसानों ने भाग लिया, जिनमें 21 महिला मछुआरा भी शामिल थे।
- संस्थान ने दिनांक 13-19 जुलाई, 2023 के दौरान नवादा, बिहार के किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें नवादा जिले के 30 किसानों ने भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 4 जुलाई 2023 को रथींद्र केवीके, श्रीनिकेतन, बीरभूम के परिसर में आदिवासी उपयोजना के तहत सजावटी मछली पालन पर 30 आदिवासी महिलाओं के लिए एक 'आदान वितरण और प्रदर्शन कार्यक्रम' का आयोजन किया।

अन्य

- इस अवधि के दौरान पश्चिम बंगाल में फरक्का के ऊपरी प्रवाह में हिल्सा संरक्षण के लिए कुल 292 हिल्सा मछलियों को छोड़ा गया। इनमें से 22 वयस्क मछलियों को 18 जुलाई 2023 तक उनके अभिगमन प्रकृति के अध्ययन के लिए टैग किया गया था।
- संस्थान ने दिनांक 10 जुलाई 2023 को राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस के अवसर पर शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग के लिए हिमालयन यूनिवर्सिटी, ईटानगर अरुणाचल प्रदेश के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया ।
- संस्थान ने अनुसूचित जाति उप-योजना के तहत दिनांक 13-14 जुलाई, 2023 को पश्चिम बंगाल के नदिया और उत्तर 24 परगना के कुमली, खोलसी और चामरदाहा आर्द्रभूमि के 550 मछुआरों को मछली फ़ीड वितरित करके मछुआरों की आय सृजन और आजीविका विकास की शुरुआत की।

सिफरी समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

गंगा नदी में छोड़े गये कार्प के बीज

बलिया। गंगा नदी में विलुप्त हो रहे मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण एवं संवर्धन को ध्यान में रखते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) के द्वारा कोटवा नारायणपुर घाट पर गंगा नदी में 200000 (दो लाख) भारतीय प्रमुख कार्प के बीज को छोड़ा गया। राष्ट्रीय नदी रैंचिंग कार्यक्रम-2023 के अवसर पर सांसद वीरेन्द्र सिंह मस्त की उपस्थिति में कतला, रोहू तथा मृगल मछलियों के बीज को रैंचिंग सह जन जागरूकता कार्यक्रम के तहत संचय किया गया। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) के अन्तर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक डा. बिके दास ने गंगा नदी में मछली और रैंचिंग के महत्व को बताया। कहा कि इस वर्ष गंगा नदी में कम हो रहे महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियों के 25 लाख से ज्यादा बीज का रैंचिंग किया गया है। मुख्य अतिथि सांसद वीरेन्द्र सिंह मस्त ने गंगा के महत्व को बताया। साथ ही इसको स्वच्छ रखने एवं जैव विविधता को बचाने के लिए लोगों से आह्वान किया। उन्होंने जलभराव वाले जल क्षेत्र जैसे सुरहताल, भागड़ नाला, मगही नदी, कोरहरा नाला आदि में मत्स्य उत्पादन के लिए प्रेरित किया, जिससे रोजगार के अवसर के साथ-साथ जल क्षेत्रों के प्रदूषण को कम करने में सहायता मिलेगी। सांसद ने सक्रिय एवं जरूरतमंद मछुआरों को जाल का वितरण किया। इस अवसर पर शिवांकित वर्मा, संजय कुमार सहायक मत्स्य निदेशक, डीके सिंह, डॉ. राजू बैठा, डा. मितेश रामटेक, डा. विकास कुमार आदि मौजूद रहे। डा. धर्मनाथ झा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

में सीमांकन करके नवीन परती को ... अग्रिम की कारवाई की जा रही है। ... किया जाएगा। संवाद

मछलियों के दो लाख बीज गंगा में छोड़े

नरहीं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद व केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) की ओर से शनिवार को कोटवा-नारायणपुर घाट पर गंगा नदी में विलुप्त हो रही मछलियों के दो लाख मत्स्य बीज को छोड़ा गया।

सांसद वीरेंद्र सिंह मस्त की उपस्थिति में कतला, रोहू तथा मृगल मछलियों के बीज को रैंचिंग सह जन जागरूकता कार्यक्रम के तहत संचय किया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. बीके दास ने कहा कि गंगा में कम हो रही महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियों के 25 लाख से ज्यादा बीज का रैंचिंग किया गया है। मुख्य ... बचाने के लिए लोगों से आह्वान किया। उन्होंने बलिया के जलभराव वाले जल क्षेत्र जैसे सुरहताल, भागर नाला, मगही नदी, कोरहरा नाला आदि में मत्स्य उत्पादन के लिए ... और जल प्रदूषण को कम करने में सहायता मिल सके। सांसद ने मछुआरों में जाल का वितरण किया। खंड विकास अधिकारी सोहांव शिवांकित वर्मा, संजय कुमार,डीके ...

नरहीं क्षेत्र के कोरंटाडीह गांव में गंगा में मछलियों के बीज छोड़ते सांसद। संवाद

প্রতিদিন

মৎস্য পালক দিবস পালন

স্টাফ রিপোর্টার, বারাকপুর: সোমবার ১০ জুলাই বারাকপুরের সিফ্রির মুখ্য কার্যালয়ে পালিত হল জাতীয় মৎস্য পালক দিবস। দেশের বিভিন্ন প্রান্তের সফল প্রগতিশীল ৯ জন মৎস্যজীবীকে এদিন সম্মান প্রদান করা হয়। তিনজন ছিলেন পশ্চিমবঙ্গ থেকে। উপস্থিত ছিলেন অরুণাচল প্রদেশের হিমালয়ান বিশ্ববিদ্যালয়ের উপাচার্য ড: কে কে শর্মা, সিফ্রির ডিরেক্টর ড: বসন্ত কুমার দাস, ৯০ জন মৎস্যজীবী-সহ অন্যান্যরা। এবছর সিফ্রি দেশের প্রায় ৩০০০ মহিলা মৎস্যজীবীকে মাছচাষের সামগ্রী সহ প্রযুক্তিগত পরামর্শ প্রদান করবে।

জাতীয় মৎস্য চাষী দিবস পালন আইসিএআর-সিআইএফআরআই-এর

১০ জুলাই জাতীয় মৎস্য চাষী দিবস পালন আইসিএআর-সিআইএফআরআই। সংস্থার সদর দফতর ব্যারাকপুরে এই দিনটি উদযাপিত হল। এই দিনটিতে শ্রদ্ধার সঙ্গে স্মরণ করা হয় মৎস্য চাষে 'প্রণোদিত কৃত্রিম প্রজনন প্রযুক্তি'র যুগান্তকারী সাফল্যকে। ভারতীয় মৎস্য বিজ্ঞানীদের এই সাফল্য ছিল মৎস্য চাষে 'প্রথম নীল বিপ্লবে'র এক উল্লেখযোগ্য মাইলফলক। এই নীল বিপ্লবের এবং মৎস্য প্রজনন প্রযুক্তির দুই স্রষ্টা ছিলেন অধ্যাপক হীরালাল চৌধুরি, ডঃ কেএইচ আলিকুনহি। সেন্ট্রাল ইনল্যান্ড ফিশারিজ রিসার্চ স্টেশন (যেটি এখন আইসিএআর-সিআইএফআরআই, ব্যারাকপুর নামে পরিচিত) -এর অধীনে ১৯৫৭ সালের ১০ জুলাই ওই কৃত্রিম প্রজনন প্রযুক্তি ওড়িশার অঙ্গুল ফিশ ফার্মে উদ্ভাবন করা হয়েছিল। ওই দুই বিজ্ঞানী ছিলেন এর পথিকৃৎ। তাই জাতীয় মৎস্য চাষী দিবস পালনের অনুষ্ঠানটি শুরু হয় ওই দুই অগ্রণী ব্যক্তিকে শ্রদ্ধা জানিয়ে। স্বাগত ভাষণ দিয়ে আইসিএআর-সিআইএফআরআই-এর ডিরেক্টর ডঃ বি কে দাস জানান, মৎস্য চাষের গবেষণা ও উন্নয়নের জন্য কেন্দ্রীয় সরকার পিএমএমএসওয়াই প্রকল্পের মাধ্যমে ২০ হাজার কোটি টাকা বরাদ্দ করেছে। মৎস্য চাষ ও প্রতিপালনে উৎসাহ দিতে এই প্রকল্পের মাধ্যমে মহিলা সশক্তিকরণ কর্মসূচি হাতে নিয়েছে সংস্থা, যার মাধ্যমে ৩০০ জন মহিলাকে প্রশিক্ষণ দিয়ে এসসিএসপি কর্মসূচির মাধ্যমে তাঁদের 'আকর্ষণীয়, রঙিন ও সুন্দর দেখতে' মাছ চাষে স্বনির্ভর করে তোলা হবে। মৎস্য চাষীদের জীবিকার মানোন্নয়নে সিআইএফআরআই যে উদ্যোগ নিয়েছে তার প্রশংসা করেন কল্যাণী বিশ্ববিদ্যালয়ের অবসরপ্রাপ্ত অধ্যাপক ডঃ বি বি জানা। তিনি কল্যাণী শাইন ইন্ডিয়ার সম্পাদক এবং নয়াদিল্লিস্থিত ন্যাশনাল অ্যাকাডেমি অফ এগ্রিকালচারাল সায়েন্সেসের ফেলো।

5 THE KALINGA CHRONICLE — *Popular people's Daily of Odisha* — BHUBANESW... National / International

ICAR-CIFRI Awards Progressive Fish Farmers on National Fish Farmers' Day, 2023

Kolkata,(KCN): ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (CIFRI) celebrated "National Fish Farmers Day" at its Headquarters at Barrackpore, Kolkata today (July 10, 2023) with gusto. National Fish Farmers' Day is celebrated every year on July 10, to commemorate the stupendous achievement of induced breeding technique, which is contemplated as the torchbearer of 'First Blue Revolution' in India. Prof. Hiralal Chaudhary and Dr. K. H. Alikunhi pioneered the 'Induced breeding technique which was successfully developed in Angul fish farm, Odisha on July 10, 1957 under the then Central Inland Fisheries Research Station, presently known as ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (ICAR-CIFRI), Barrackpore.

The programme started with paying tribute to Dr. Hiralal Choudhury and Dr. K. H. Alikunhi. Dr. B.K. Das, Director, ICAR-CIFRI welcomed the dignitaries, farmers and all present there. He pointed out the government's efforts to provide aid for fisheries development through PMMSY to the tune of Rs. 20,000 crores. Moreover, ICAR-CIFRI has started a programme for empowering 3000 women by providing them input for developing fish culture unit such as ornamental fish culture under SCSP programme.

Dr. B.B. Jana, Retired Professor, University of Kalyani, West Bengal, Fellow, National Academy of Agricultural Sciences, New Delhi, and Secretary Kalyani Shine India appreciated CIFRI's initiative for farmers' livelihood uplift. He expressed his concern regarding river pollution and the continuously deteriorating environmental conditions which he considered as posing detrimental effect on the fisheries, their production and conservations.

Shri Lokman Molla, Secretary, Kultoli Milantirth Society, Sundarban appreciated CIFRI's initiative in Sundarban.

Prof. Kuldeep Krishan Sharma, Chief Guest and Vice-Chancellor, Himalayan University, Itanagar highlighted ICAR-CIFRI's pioneering achievements in the inland fisheries sector as well as the institution's contribution in women empowerment. A MOU was also signed between ICAR-CIFRI and Himalayan University, Itanagar for research and academic collaboration. Professor Sharma stated that such a collaborative project can be very rewarding in the future. He said, the farmers who got trained at CIFRI can play the role of ambassador to disseminate the knowledge and Institute technology to other places, resulting in tackling the food security problem.

In the programme, nine progressive fish farmers from Sapaul (Bihar), West Champaran (Jharkhand), Eluru (Andhra Pradesh), Nalbari (Assam), Gangtok (Sikkim), Balasore (Odisha) and South 24 Parganas (West Bengal) were awarded. The objective of awarding farmers is to appreciate and popularise their works as well as to encourage other farmers towards the fisheries sector. One book entitled, "Success Stories from Wetlands" was released in which eight wetlands of states like West Bengal, Bihar, Manipur and Assam are covered. In today's programme, 90 fishing farmers were present.

The regional centres of the Institute, Bangalore, Vadodara and Prayagraj also celebrated National Fish Farmers Day, covering 155 farmers and 20 students.

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है